फरीदाबाद

मजदूर समाचार

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा

नई सीरीज नम्बर 76

अक्टूबर 1994

इस अंक में

- विक्टोरिया जूट मिल
- कैजुअल वरकर
- बाटा
- नवोदय विद्यालय
- अधिक काम कम आराम

मजदूरी करने को मजबूर बच्चे

● करौली, राजस्थान के शिकारगंज मोहल्ले में 70 घर हैं। यहाँ के चार बच्चे स्कूल जाते हैं और बाकी बच्चे बेलदारी, कारीगरी और खदान में झराई व रोटी बनाने का काम करते हैं। प्रेम सिंह 12 साल का है – माँ मर गई है, बाप खान पर काम करता है। पूरन 11 साल का है – बाप मर गया है, माँ बेलदारी करती है। धूप सिंह का पिता खान पर काम करता है।

पहली और दूसरी तक पढे यह बच्चे कारीगर का काम करते हैं। 8 बजे से 5 बजे तक हथौड़े और छेनी से पत्थरों की छटाई करते हैं। 15 रुपये रोज मिलते हैं पर महीने में 15 दिन ही काम मिलता है। काम नहीं मिलता तब आस-पास की खानों से पत्थर लाते हैं।

यह बच्चे अपने को बच्चे नहीं मानते। कहते हैं, "छोटे-छोटे हत्ते जब खेलते-डोलते रहते पर अब तो बड़े ह गये या मारे धन्धे पे जावैं।" थोड़ा भी खेलने लगते हैं या काम नहीं करते तब ठेकेदार माँ-बहन की गाली देते हैं और कहते हैं कि काम करो नहीं तो घर भाग जाओ। एक ठेकेदार ने इन बच्चों के चार-पाँच दिन के पैसे नहीं दिये। माँगने गये तब गाली दी और हाथ मरोड़ कर पिटाई करके भगा दिया। ज्यादातर ठेकेदार बच्चों के हाथ मरोड़ते हैं, थप्पड़ मारते हैं, गाली देते हैं। काम करते समय पत्थर गिर पड़ा जिससे प्रेम सिंह के सिर में चोट लगी, सात टाँके आये।

प्रेम, पूरन, धूप की टोली में दल सिंह भी है। इन बच्चों में से किसी एक को भी ठेकेदार निकाल देता है तो बाकी तीन भी यह सोच कर उसके वहाँ काम करना छोड़ देते हैं कि आज इसको हटाया है तो कल हमें भी हटा देगा।

● करौली के खार मोहल्ले की नगीना, सादिका, रजिया सुलताना, शबाना, यास्मीन बीड़ी बनाती हैं। 13 वर्षीय यास्मीन सवेरे 8 बजे से शाम चार बजे तक बीड़ी बनाती है। शाम को पत्ते गलाते हैं, सुबह काटते हैं, छीलते हैं, जर्दा भरते हैं, धागे से बाँधते हैं। एक हजार बीड़ी बनाने पर 18 रुपये 50 पैसे मिलते हैं। यास्मीन एक दिन में 500 बीड़ी बना पाती है। वह आठ-नौ साल की उम्र से यह काम कर रही है। तीसरी क्लास के बाद भाई ने स्कूल नहीं जाने दिया यह कह कर कि बड़ी हो गई है। यास्मीन के चारों भाई पढे-लिखे हैं।

नगीना आठवीं में पढती है। वह 12 बजे तक पढती है और शाम तक बीड़ी बनाती है।

बीड़ियाँ बनाने के साथ-साथ सब बच्चियाँ घर का काम भी करती हैं।

● जयपुर में ट्रान्सपोर्ट नगर के बगल की नागतलाई बस्ती के मर्द चूने के भट्टों पर काम करते हैं, औरतें व लड़कियाँ भट्टों के पास पत्थर तोड़ती हैं और लड़के ट्रांसपोर्ट नगर में मिस्त्री का काम सीखते हैं। सवेरे 8 से रात 9 बजे तक ऑयल-ग्रीस से रंगे बच्चों में 12 वर्षीय बाबु लाल भी है। तीन साल से काम कर रहा बाबु लाल गाड़ी में ऑयल बदलने, ग्रीस करने, ब्रेक लगाने, गियर फिट करने आदि काम करता है और महीने में उसे 200 रुपये मिलते हैं। सुबह 8 से रात 9–10 तक काम करने वाले बाबु लाल को शाम को इन्जन खुलने आने पर बुरा लगता है क्योंकि तब घर पहुँचने में रात के बारह-एक बज जाते हैं। बाबु लाल के मुताबिक, "अलग-अलग खोपड़ी के ड्राइवर आते हैं। कई तो हमें चाय पिलाते हैं, जाते टाइम पैसे देते हैं और कई बिना गाली के बात ही नहीं करते।"

बाबु लाल की बस्ती की 12 वर्षीय लाली कई साल से अपनी माँ के साथ पत्थर तोड़ती है। दिन भर में लाली दो दाब पत्थर तोड़ देती है और 12 रुपये कमाती है।

● जयपुर में बाबु का टीबा मोहल्ले का आरिफ रत्नों - नगीनों पर पालिशिंग के हमीद सामट के कारखाने में काम करता है। कारखाना बिना खिड़की का 7X12 फीट का कमरा है और साढे नौ वर्षीय आरिफ वहाँ पाँच साल की उम्र से काम कर रहा है। साढे चार साल में आरिफ ने कान्दी पर पन्ना जड़ना और बच्छी बनाना सीख लिया है। वह अन्य मजदूरों को औजार पकड़ाने, उनके लिये पानी लाने, कारखानेदार के मेहमानों के लिये चाय लाने के काम भी करता है लेकिन आरिफ को अभी कोई मजदूरी नहीं मिलती, त्यौहार पर उसे 2–4 रुपये दिये जाते हैं। आरिफ के साथ दस साल का सलीम भी काम करता है। पाँच साल से काम कर रहा सलीम 300 रुपये महीना पाता है। 16 साल के इमामुद्दीन को भी काम करते 5 साल हो गये हैं और उसे भी 300 रुपये महीना मिलते हैं। आरिफ के साथ काम कर रहे मोहम्मद हबीब की उम्र 12 साल है। पिछले साल ही हबीब ने काम सीखना शुरू किया है और उसे कोई मजदूरी नहीं मिलती। हबीब साल-भर में ही 12–15 कारखानों में काम कर चुका है। बुरे बर्ताव की वजह से वह इतनी जल्दी और बार-बार कारखाने बदलता रहा है।

जयपुर के रत्न उद्योग में 20 हजार बच्चे काम करते हैं।

● तिलोनिया गाँव से सुबह सात बजे किशनगढ शटल पकड़ने वाले 150 लोगों में 14 वर्षीय नौरतमल भी है। उसके पिताजी रेलवे में नौकरी करते हैं। तीन साल से किशनगढ में परचून की दुकान पर काम कर रहा नौरतमल कहता है, "जिस दुकान पर मैं काम करता हूँ वह स्टेशन के पास ही है पर मैं पहले स्टेशन से सेठजी के घर जाता हूँ। वहाँ रोटी रख सेठजी के लड़के के साथ दुकान आता हूँ। दुकान खोल कर उसकी सफाई करता हूँ। दोपहर एक से दो तक खाने की छुट्टी होती है। शाम को साढे छह तक काम करता हूँ . . . सारे दिन ग्राहक आते रहते हैं इसलिये थक जाते हैं। त्यौहार और शादी ब्याह के सीजन में तो रात के नौ-नौ बजे तक रोक लेते हैं सेठजी। उन दिनों उनके घर पर ही सोना पड़ता है।" नौरतमल को तीन साल पहले 150 रुपये महीना पर रखा गया था, अब उसे 500 रुपये दिये जाते हैं। जिस दिन काम पर नहीं जाता, 15 रुपये काट लिये जाते हैं। नौरतमल सामान तौलने, सामान लाने - ले जाने, उठाने - धरने के साथ-साथ बैंक से पैसे लाने, बाजार से माल लाने व पैसे देने जाने के काम भी करता है।

● चिड़ावा का 9 वर्षीय मुकेश 10 रुपये रोज में सुबह 5 बजे से रात 11 बजे तक होटल पर काम करता है। सुबह सवेरे ढाबे पर झाड़ू लगाना, ग्राहकों को चाय, कचौरी, समोसा व मिठाई पकड़ाना, देर रात बड़े-बड़े बर्तनों को साफ करना मुकेश के रोजाना के काम हैं।

(जानकारी हमने 'संप्लव' के मई 90 अंक से ली है। पता है – सुष्मिता बैनर्जी, 52 शान्तिनिकेतन कालोनी, बरकत नगर, जयपुर – 302015)

जस्ट इन टाइम

विश्व मंडी में प्रतियोगी बने रहने के लिये जनरल मोटर कम्पनी की अमरीका स्थित फैक्ट्रियों में 1985 में जहाँ चार लाख पच्चीस हजार मजदूर काम करते थे वहाँ अब दो लाख पचास हजार वरकर ही हैं। कम से कम लागत पर अधिक से अधिक प्रोडक्शन के लिये मैनेजमेंट द्वारा अमरीका से बाहर प्रोडक्शन करवाने और अमरीका में फैक्ट्रियों में काम की रफ्तार बढा कर कम मजदूरों से अधिक उत्पादन लेने का उपरोक्त परिणाम है। नौकरियाँ कम करते हुये प्रोडक्शन बढाने के सिलसिले से फैक्ट्रियों में एक्सीडेन्टों में वृद्धि हुई है। मजदूरों में असन्तोष बढा है और इस साल अब तक अमरीका में जनरल मोटर की फैक्ट्रियों में 9 हड़ताल हो चुकी हैं।

हाल ही में अमरीका में एन्डरसन नगर स्थित अपने एक पार्ट्स प्लान्ट में काम की रफ्तार बढाने और कुछ काम बाहर करवाने का निर्णय कर जनरल मोटर मैनेजमेंट ने प्लान्ट के 3,300 मजदूरों में से एक हजार की नौकरी खत्म करने की राह पर कदम बढाये। मजदूरों ने मैनेजमेंट के निर्णय के खिलाफ हड़ताल कर दी।

खर्च में कटौती के लिये दुनियाँ-भर में मैनेजमेंटें अधिकाधिक जस्ट इन टाइम पद्धति अपना रही हैं जिसमें अलग-अलग जगह के प्रोडक्शन का ऐसा तालमेल रखा जाता है कि गोदामों में माल जमा नहीं करना पड़ता। जनरल मोटर में भी जस्ट इन टाइम सिस्टम है। इससे उस छोटे से पार्ट्स प्लान्ट में हड़ताल से उत्तरी अमरीका स्थित जनरल मोटर के 15 असेम्बली प्लान्टों में काम ठप्प हो गया। ब्रेक लाइटों, बम्परों और अन्य पार्ट्स के अभाव में कारों तथा ट्रकों का प्रोडक्शन 15 फैक्ट्रियों की असेम्बली लाइनों पर जाम हो गया। इसलिये एन्डरसन पार्ट्स प्लान्ट में हड़ताल को तीन दिन ही हुये थे कि मैनेजमेंट ने अपने कदम कुछ पीछे हटा कर फैक्ट्री में काम शुरू करवाया।

(जानकारी हमने अमरीका में प्रकाशित 'चैलेंज' के 21 सितम्बर 94 अंक से ली है।)

इस अखबार के काम में हाथ बँटाने के लिये, अखबार के विस्तार के लिये आप इनमें से कोई एक या कई अथवा सब काम कर सकते हैं :

– अखबार की सामग्री पर राय देना।

– अखबार में छपने के लिये सामग्री जुटाना।

– अखबार बाँटने में हिस्सा लेना।

– अखबार पर खर्च के लिये रुपये-पैसे देना।

विक्टोरिया जूट मिल

विक्टोरिया मिल को बन्द हुये दस माह से ऊपर हो गये हैं किन्तु ये मिल फिर से खुले इसकी चिन्ता न सरकार को है न मालिक को। यहाँ के मजदूर भूख से चीख रहे हैं किन्तु इनकी चीखों को सुनने का समय न यूनियन के पास है और न मालिक के पास। दस वर्षों से यहाँ के मजदूर भुखमरी के शिकार हैं। इनकी दशा पर तरस भी किसी को नहीं आ रहा है। मालिकों की तरफ से हमेशा मजदूरों को गलत ठहराया जाता रहा है। इनकी नाकामियों को गिनगिन कर मिल के दरवाजे पर लटकाया जाता है। बेजुबान और असहाय मजदूर जब जुबान खोलने के लिये उठते हैं तब उनकी जुबान कोलॉक आउट और टेम्परेरी वर्क सस्पैन्शन रूपी चाकू से काट दिया जाता है। बगावत को नपुंसकता का जामा पहना दिया जाता है। विक्टोरिया के मजदूरों ने जितने भी आन्दोलन किये उनका एकमात्र स्रोत मालिकों की शोषण की नीति रही है। सौ दिनों की मजदूरी, पाँच सालों का बोनस, दो-तीन सालों का चौदहिया, बीस वर्षों से ऊपर मरे हुये मजदूरों का अभी तक बकाया, ग्रेड - स्केल तथा वर्तमान में 600 मजदूरों को गैर-कानूनी ढँग से बिना किसी भुगतान किये निकालना – ये सब यहाँ के मालिकों के शोषण के नमूने मात्र हैं। फिर भी यहाँ के मजदूर सारी परेशानियों को सहते गये इस डर से कि कहीं मिल बन्द न हो जाये। इन ग्यारह वर्षों में यह मिल 6 वर्ष तक बन्द रही है। हर बार मालिकों ने मिल बन्द की है। शिकार मजदूर होते हैं। बन्द की अवधि में मजदूरों को कोई भुगतान नहीं किया गया। इस बार यहाँ के मजदूरों ने स्वतन्त्र ढँग से पी एल ए (प्रोग्रेसिव लेबर एसोसियेशन) कमेटी बना कर लड़ाई लड़नी शुरू कर दी है। इस कमेटी के माध्यम से यहाँ के मजदूरों ने विक्टोरिया मालिक को अदालत के कटघरे में ला खड़ा किया है। बन्द अवधि के लिये मजदूरों को भुगतान मिलना चाहिये क्योंकि वर्क सस्पैन्शन या लॉक आउट मजदूर नहीं मालिक द्वारा होता है। पी एल ए के माध्यम से केस कलकत्ता हाई कोर्ट में दायर किया जा चुका है और बहुत जल्द बहस शुरु होने वाली है। यदि मजदूर इस केस में सफल होते हैं तो पश्चिम बंगाल के मजदूर इतिहास में यह एक नया मोड़ साबित होगा।

जब मजदूर अपनी जीविकापार्जन के लिये दो रोटी की खोज में पड़े हुये हैं तब अचानक 17.8.94 रात्रि में जो कुछ पानी और बत्ती मजदूरों को मिलते थे उन्हें भी काट दिया गया। अब मजदूरों के सामने रोटी के साथ-साथ पानी और बत्ती की भी समस्या आ खड़ी हुई। इस समस्या को ले कर कम से कम सत्तर से अस्सी लाइन के मजदूरों ने पी एल ए के माध्यम से मिल के गेट पर अवरोध खड़ा किया। एक घन्टे के अवरोध के बाद मैनेजमेंट द्वारा विश्वास दिलाया गया कि मजदूरों को सीमित संसाधनों को देखते हुये बत्ती और पानी मिलेगा। इसके बावजूद भी मजदूर सन्तुष्ट नहीं हुये और इस चेतावनी के साथ वापस लौटे कि यदि दो-तीन दिनों के अन्दर समस्या का हल नहीं होता है तो गेट फिर जाम कर दिया जायेगा। इस जलूस में एक ही नारा था, "मिल के अन्दर पानी-बत्ती होगा तो हमें भी पानी-बत्ती मिलना चाहिये।"

व्यवस्थापक ने ठीक दूसरे दिन से बाकायदा नोटिस लगा कर पानी और बत्ती देने शुरु कर दिये। किन्तु अभी भी बत्ती समयानुसार नहीं मिल रही है जिससे मजदूरों में क्षोभ व्याप्त है।

25.8.94 सरोज कुमार, विक्टोरिया जूट मिल लाइन नम्बर 25/636, हुगली

हितकारी पोट्रीज

बदन सिंह 32 साल से हितकारी पोट्रीज में चौकीदारी करता था। बीमार होने की वजह से वह 12.9.94 से छुट्टी पर चल रहा था। 16.9.94 को मजदूरों को अगस्त माह का वेतन हितकारी मैनेजमेंट ने दिया तब बदन सिंह घर से 17.9.94 को फैक्ट्री आया और मैनेजर से कहा कि मैं बीमार हूँ, दवा लेनी है, मुझे अगस्त माह का वेतन दे दीजिये। इस पर प्रोडक्शन मैनेजर बोला कि तुम बीमार हो तो घर से क्यों आये हो, और बदन सिंह को वेतन नहीं दिया। किसी तरह वह अपने घर पहुँचा और रुपये के अभाव में 19.9.94 को शाम 8 बजे बदन सिंह सदा के लिये सो गया। 20.9.94 को उसका सम्बन्धी फैक्ट्री को सूचना देने आया तब मैनेजमेंट ने 2000 रुपये अगस्त माह के वेतन में से दूसरे चौकीदार के द्वारा भेजे जबकि बदन सिंह का अगस्त माह का वेतन 4700 रुपये बना था – रात दिन काम करके ओवरटाइम से।

22.9.94

– हितकारी पोट्रीज का एक मजदूर

सितम्बरअंक में 'सुपर अलॉय कास्ट' में मार्च माह में एक्सीडेन्ट में घायल हुये मनोज कुमार का खत छपा था। खुद भाग-दौड़ करके मनोज ने मैनेजमेंट को मजबूर किया है कि वह उसे ड्यूटी पर ले। 27 सितम्बर से मनोज कुमार ने फैक्ट्री में काम करना शुरू कर दिया है।

गाम का चौकीदार

एक गूँठा टेक चौकीदार से हमें एक इश्तहार मिला है। पर्चे में 15 सितम्बर को चन्डीगढ में प्रदर्शन के लिये हरियाणा के चौकीदारों का आह्वान है। गाँवों में चौकीदारों की 24 घन्टे की ड्यूटी है। हरियाणा सरकार इन चौकीदारों को 300 रुपये महीना देती है पर वह भी नियमित नहीं दिया जाता। गाँव में जो भी अफसर या नेता जाता है वह गाम के चौकीदार से बेगार लेता है।

कैजुअल वरकर

मैं 10 दिसम्बर 1993 से कई कम्पनियों में कैजुअल नौकरी करता आ रहा हूँ। मैंने अपने इस 9-10 महीने के पीरियड में कई अनुभव किये हैं। यह कैजुअल प्रथा हमारी सरकार की नीति है या फिर उद्योगपतियों और मैनेजमेंटों की नीति है? कोई कम्पनी 56 दिन, कोई 79 दिन, कोई 120 दिन रखती है। कैजुअल आदमियों की समस्या को सुनने के लिये न ही कोई यूनियन है, न कोई नेता है, न कैजुअलों का अपना कोई महत्व है, न किसी सरकार के पास कोई रास्ता है।

कैजुअल कौन हैं? आज का युवा वर्ग अधिकतर कैजुअल वरकरों में आता है। कम्पनियों में 55-56 दिनों की नौकरी के लिये सिफारिश चाहिये और ITI चाहिये। बगैर ITI वाले हैल्पर में आते हैं। लेकिन ITI का क्या महत्व है जबकि काम दो- तीन महीने के लिये ही मिलता है। आज का युवा वर्ग क्या तरक्की करेगा जब वह ऐसे गेट-गेट पर घूमता रहेगा। और फिर कम्पनियों का एक नया नियम कि जो आदमी उस कम्पनी में 3 या 4 महीने काम कर लेता है फिर उसे एक साल बाद लिया जाता है। एक साल तक चाहे वह भूखा रहे या प्यासा, इस बात से उन्हें कोई मतलब नहीं है।

मैं एक ऐसी कम्पनी के विषय में आपको बताना चाहता हूँ जो कि फरीदाबाद में नम्बर एक पर आती है और जिसका नाम दुनियाँ-भर में जाना-पहचाना है – Escorts. एस्कोर्ट्स के फोर्ड प्लान्ट में एक डिपार्ट CT/CH मशीन शॉप का हाल मैंने आखों देखा और कानों सुना है। यहाँ कैजुअल चाय लन्च में चाय नहीं पीयेगा, काम करता रहेगा। सुपरवाइजर और मैनेजरों का तरीका है धमकी देना कि अगर हमारी बात नहीं मानोगे तो ब्रेक कर देंगे। कैजुअलों की प्रोडक्शन भी ज्यादा निर्धारित होती है और उस प्रोडक्शन को देने के बाद दूसरी जगह भी काम करने को लगाया जाता है। ऑल एस्कोर्ट्स में जनवरी से अब तक महँगाई भत्ते से जो वृद्धि हुई है वह किसी भी प्लान्ट में कैजुअलों को नहीं दी गई है। 24.9.94

लोकल आफिस सैक्टर 8

एक तरफ तो कर्मचारी राज्य बीमा निगम जहाँ सामाजिक सुरक्षा का दावा करती है वहीं दूसरी तरफ सैक्टर 8 का स्थानीय कार्यालय गरीब मजदूरों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ का प्रत्यक्ष नमूना बना हुआ है। लोकल आफिस का वर्तमान भवन इस प्रकार से है मानो वह सरकारी कार्यालय न हो कर मुर्गियों का दड़बा हो। सामान्य से भी छोटे मात्र तीन कमरे हैं जिनमें एक ओर कार्यालय का रिकार्ड, फर्नीचर तथा कर्मचारी ठूँसे रहते हैं और दूसरी ओर भुगतान प्राप्त करने मजदूर अपना नम्बर आने की प्रतीक्षा में खड़े होते हैं। इन मजदूरों में कुछ ऐसे भी होते हैं जो छूत की बीमारियों से ग्रस्त होते हैं परन्तु सामान्य रूप से बीमार या दुर्घटनाग्रस्त लोगों के साथ वो इस प्रकार जुड़ कर खड़े होने को बाध्य होते हैं कि उनकी साँसों की हवा एक-दूसरे को महसूस होती है। इस प्रकार वो गरीब मजदूर जो सामान्य रूप से बीमार होते हैं या दुर्घटनाग्रस्त होते हैं उनके भी इन बीमारियों से ग्रस्त होने की आशंका बढ जाती है। बीमारी की हालत में भी लोगों को पूरे समय खुले में खड़े रहना पड़ता है जो कि स्वास्थ्य पर बुरा असर डालता है। सर्दी में ठण्डी हवा को झेलना, गर्मी की चिलमिलाती धूप में लू सहना और बारिश में भीगते लाइन में खड़े रहना पड़ता है। ई एस आई लोकल आफिस सैक्टर 8 में ना तो पीने के पानी की कोई व्यवस्था है और ना ही अन्य जन सुविधायें उपलब्ध हैं। 15.9.94

महर्षि आयुर्वेद कारपोरेशन

बुढिया नाला के निकट महर्षि आयुर्वेद के प्रबन्धक ने यूनियन बनाने के कारण 10-11 श्रमिकों पर मनगढन्त आरोप लगा कर 21.5.94 को सस्पैन्ड कर दिया था। श्रम निरीक्षक महोदय के यहाँ गेट रोकने की शिकायत की गई तभी 6.6.94 को निलम्बन पत्र दिया गया मगर आरोप पत्र 18.7.94 को दिये गये। 21.5.94 से 31.5.94 तक का निलम्बन भत्ता आज तक नहीं दिया है। श्रमिक बराबर समय पर हाजरी लगाते हैं और बराबर इनक्वायरी में बैठते हैं मगर जाँच अधिकारी इनक्वायरी की प्रतिलिपी नहीं देता। प्रबन्धन ने श्रमिकों पर इनक्वायरी में देरी करने का आरोप लगा कर निलम्बन भत्ता घटा कर 25 प्रतिशत कर दिया है जो मात्र यूनियन को नष्ट करने की साजिश है और कानून को चुनौती है। प्रबन्धक प्रतिनिधि श्रमिकों को बराबर परेशान करते हैं। श्रमिक संगठित रहते हुये ही सभी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। 29.9.94 – अवनीश कुमार

लड़का-लड़का-लड़का

शहर की अवैध धक्का बस्ती में एक दो लड़कियों की माँ को पुरूषप्रधान समाज के हाथों दर्दनाक मृत्यु का शिकार होना पड़ा। इस तान्डव नृत्य में शामिल हुये – उसका पतिदेव, एक विधवा ननद व उसकी सास।

महिला का अपराध यह था कि पहले ही दो लड़कियों को जन्म देने के बाद तीसरी बार भी वह अपने गर्भ में एक लड़की को पाल रही थी। घरवालों द्वारा बार-बार कहने पर भी वह मनहूस कहलाने वाली औरत गर्भपात को स्वीकार नहीं कर रही थी। मृत्यु की रात उसे गर्भपात की गोली खाने को बाध्य किया गया। प्रातः हार्ट अटैक से अचानक मृत घोषित किये जाने पर सबने मिल कर दाह संस्कार कर दिया। दाह संस्कार से लौटे लोगों को बड़ी इज्जत के साथ तुरन्त लौटा कर मार देने के सबूत मिटाये गये। क्यों? क्योंकि बेचारी को पूरे समाज ने मिल कर यमलोक की खाक में बदल दिया था।

जब तक पुरूषप्रधान समाज की वर्तमान व्यवस्था को बदला नहीं जायेगा और जब तक बदला नहीं जायेगा इस पूँजीवादी व्यवस्था को, तब तक आधी आबादी के साथ यों ही अमानवीय व्यवहार किया जाता रहेगा।

14.8.94 – अंजना देवी

अधिक काम . . . अधिक प्रोडक्शन . . . अधिक विकास . . .

फैक्ट्री में आठ घन्टे की शिफ्ट। आना-जाना मिला कर 10-12-14 घन्टे का काम। पर झुग्गी - कोठरी का किराया, दाल-भात का दाम, स्कूल-कॉलेज के खर्चे, बस-ट्रेन के किराये, गर्मी में पँखे की दरकार, सर्दी में बिस्तर की मार। नतीजा- - शिफ्ट के दौरान प्रोडक्शन टारगेट - इनसेनटिव के लिये काम की बढती रफ्तार, शिफ्ट के बाद ओवरटाइम, एक ड्यूटी के बाद दूसरा काम, एक घर से दो-तीन लोगों का नौकरी करने वालों की लिस्ट में नाम।

जाहिर है- कम मजदूरी . . . बढती मजबूरी . . . अधिक काम।

ज्यादातर लोग जरूरत और डन्डे के दबाव में ही अधिकाधिक काम करते हैं। पर ऐसी स्थिति में बढते काम के खिलाफ इतना कम विरोध क्यों?

अधिक काम . . . अधिक प्रोडक्शन . . . अधिक विकास . . . आमतौर पर इलाके के, देश के, कम्पनी के विकास को बेहतर जीवन की कुँजी माना जाता है। आम मान्यता है कि इतिहास में वर्षों से विकास होता आया है और भविष्य में ऐसे विकास से ही बढिया जिन्दगी की आशा की जा सकती है। लोग इसी उम्मीद को वर्तमान की भागदौड़, ओवरटाइम, परेशानियों, निराशाओं को सहने का तिनका बनाते हैं।

लेकिन ढेरों अन्य आम धारणाओं की तरह यह तिनके भी क्या मात्र तिनके नहीं हैं?

यह सही है कि सदियों से समाज में संचित श्रम यानि मृत श्रम की मात्रा में वृद्धि हो रही है। यह भी सही है कि जानकारी/ज्ञान, औजारों, मशीनों, मानसिक एवं शारीरिक दक्षता आदि के रूप में मृत श्रम सजीव श्रम को अधिक उत्पादक बनाने की क्षमता रखता है, अधिक उत्पादक बनाता आया है। पर यह जरूरी नहीं है कि इस बढती उत्पादकता, उत्पादन के प्रयोग का लक्ष्य काम करने वालों के लिये बेहतर जीवन होगा। असमानता वाले समाज में- जहाँ मृत श्रम पर सजीव श्रम का यानि काम करने वालों का कन्ट्रोल नहीं होता- ऐसा नहीं होता। यानि, संचित श्रम की मात्रा में विकास (बढोतरी) का मतलब हमारी जीवन स्थिति में विकास (बेहतरी) नहीं होता। हाँ, जीवनस्तर में थोड़ा-बहुत सुधार कामकरने वालों के संघर्षों से होता है। पर काम का, प्रोडक्शन का, विकास का लक्ष्य बेहतर जीवन नहीं है। सजीव श्रम और मृत श्रम के आपसी रिश्ते में बदलाव के बिना स्थिति यही रहेगी।

अधिक विकास . . अधिक प्रोडक्शन . . अधिक काम . . कम फुर्सत . . कम आराम . .

उच्च कोटी के विद्यालय

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने 1986 में अभाव में पलते होनहार बच्चों को अच्छी शिक्षा के नाम पर नवोदय विद्यालय समिति कायम की थी। स्कीम हर जिले में ऐसा एक विद्यालय स्थापित करने की है। इस समय समिति द्वारा संचालित 23 राज्यों व 6 संघ शासित प्रदेशों में 322 नवोदय विद्यालय कार्यरत हैं।

प्रत्येक नवोदय विद्यालय में हर वर्ष छठी कक्षा में 80 विद्यार्थियों को योग्यता के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। इनमें तीन चौथाई सीटें ग्रामीण बच्चों के लिये और एक चौथाई सीटें शहरी बच्चों के लिये होती हैं। सभी छात्र/छात्राओं को प्राँगण में स्थित होस्टल में रहना अनिवार्य है। बच्चे इन स्कूलों में बारहवीं कक्षा तक शिक्षा पाते हैं।

उच्च कोटी के इन विद्यालयों में हालात की एक बानगी-

इस साल 29 अगस्त को श्रीगंगानगर नवोदय विद्यालय के छात्रावास की तीन लड़कियों ने आत्महत्या का प्रयास किया। विवाद उठने पर प्रिंसीपल पतराम तथा होस्टल वार्डन रजिया बेगम लापता हो गये।

एक अन्य उदाहरण नवोदय विद्यालय देवराला का है। इस साल जुलाई में ग्रीष्म अवकाश की समाप्ती के पश्चात् पुनः खुलने पर एक लड़की ने होस्टल में जहर खा कर आत्महत्या कर ली। पिछले वर्ष इस नवोदय स्कूल के डी पी ई ने बारहवीं कक्षा की एक लड़की से बलात्कार किया था। बाद में उक्त डी पी ई ने कबूल किया कि वह वर्षों से यह कर रहा है और अब तक दर्जनों लड़कियों से बलात्कार कर चुका है।

सामुहिक से जुड़े सवाल का शेष

बजाय हम दुनियाँ-भर में मार-काट की तैयारियों का जुनून देखते हैं। साथ ही, अमरीका सरकार जेलें बनाने का रिकार्ड कायम करने में मशगूल है तो जापान में बच्चों द्वारा आत्महत्यायें तेज रफ्तार से बढ रही हैं। हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी से जुड़ी समस्याओं के निजी रूप की सामाजिक हकीकत को मिसाइलों के मंडराते खतरे दहशती अन्दाज में सामने लाते हैं।

रोजमर्रा की बातचीत में "मेरा/हमारा काम हो जाये, दुनियाँ जाये भाड़ में " और "जहाँ सबका बेड़ा गरक होगा वहाँ अपने भी भुगत लेंगे " जैसे आम बने फिकरे निजी तथा सामाजिक की गुत्थमगुत्था की ही अभिव्यक्ति है।

विभिन्न स्तर की निजी समस्याओं के रूप में प्रकट होती हमारी समस्याओं की सामाजिक हकीकत वह चीज है जो उनके माधान के लिये सामुहिक कदमों को महत्वपूर्ण बनाती है। हमारे सामुहिक कदमों की दिशा आज अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गई है। छोटे-छोटे झुन्डों में हम एक-दूसरे से सिर-फुटैव्वल करेंगे अथवा बढ़ते पैमाने पर एकजुट होते हुये नये विश्वव्यापी समता समाज के निर्माण का बीड़ा उठायेंगे, यह जीवन-मरण का प्रश्न है।

चर्चा जारी रहेगी।

कही-सुनी-देखी

★ सितम्बर अंक में एक पोस्टमैन द्वारा अपनी जिन्दगी को बुग्गी के भैंसे जैसी बताने को एक **दूसरे पोस्टमैन** ने समझाया, "1981 में जब मैं भर्ती हुआ तब जी पी ओ में 43 पोस्टमैन थे। आज जी पी ओ में 38 पोस्टमैन हैं। इस बीच क्षेत्र की आबादी तीन गुणा बढ गई है। संजय मेमोरियल नगर, डबुआ कालोनी, अनखीर गाँव, सैक्टर 21 का नक्शा ही बदल गया है।"

★ **ईस्ट इंडिया कॉटन मिल** के एक वरकर ने बताया, "पिछले साल बोनस 13 परसैन्ट मिला था। हमें बोनस जून में मिल जाता है लेकिन इस साल सितम्बर का अन्त आ रहा है और बोनस अभी तक नहीं दिया गया है। 7 सितम्बर को गेट मीटिंग में हमें बताया गया कि मैनेजमेंट बोनस बढाने की बजाय घटाने पर अड़ी है। मैनेजमेंट कह रही है कि शेयर होल्डरों से उनकी हिस्सा-पत्ती खरीदने के कारण हाथ तंग है इसलिये साढे आठ परसैन्ट बोनस ही देगी। मैनेजमेंट यह नहीं कह रही कि घाटा हुआ है। प्रोडक्शन पिछले साल से ज्यादा हुआ है।"

★ **एक मजदूर** को कहते सुना, "जब भी कोई वरकर दफ्तर में जा कर एडवान्स माँगता है तब हमारा मैनेजर छाती पर हाथ रख कर कहता है कि मैं बीमार हूँ। पहले मैं दवाई खा लूँ। तुम कल आना।"

★ **ग्रीन फरीदाबाद** के नाम पर मैनेजमेंटों को सार्वजनिक जमीनों पर कब्जे करने तेज करते देखा। इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित आटोपिन फैक्ट्री मैनेजमेंट उस सार्वजनिक जमीन पर कब्जा कर रही है जिस पर चुपचाप कब्जा करने की उसकी कोशिश कुछ समय पहले सार्वजनिक विरोध की वजह से फेल हो गई थी।

★ **बेलमोन्ट रबड़ फैक्ट्री** के एक वरकर ने बताया, " फैक्ट्री में जहाँ सफेद पावडर इस्तेमाल होता है वहाँ के मजदूरों को मैनेजमेंट साबुन नहीं देती। जहाँ कार्बन इस्तेमाल होता है वहाँ के वरकरों को ही साबुन दिया जाता है। यह इसलिये कि काला मैल दीखता है और सफेद मैल नहीं दीखता।"

★ फैक्ट्री में साथ काम करते एक **मजदूर ने ड्यूटी के दौरान** बताया, "मेरे दोनों लड़कों का पढने में मन नहीं लगता इसलिये मैंने उन्हें काम सीखने के लिये वर्कशॉपों में लगा दिया है। मेरा एक बेटा थर्मल पावर हाउस में नौकरी कर रहे मेरे चाचा के लड़के के साथ एक आटोमोबाइल वर्कशॉप पर काम करता है। दोनों बच्चे सुबह से रात तक वहाँ बिना पैसे में काम करते हैं। वर्कशॉप वाले लड़कों से इन्जनों में से तेल निकलवा लेते हैं और नये की जगह पुराने पार्ट लगवा देते हैं। एक दिन मेरे चाचा का लड़का वर्कशॉप वाले के इशारे पर एक गाड़ी में नये की जगह पुराना पार्ट लगा रहा था। गाड़ी वाले ने देख लिया और वर्कशॉप वाले से कहा। इस पर वर्कशॉप वाले ने बच्चे की बहुत पिटाई की और उसे अगले दिन से वर्कशॉप आने से मना कर दिया।"

★ पड़ोस में रह रहे **केल्विनेटर के एक वरकर** ने अपनी वर्दी प्रेस करने को दी थी। किसी कारण वर्दी प्रेस नहीं हो सकी तो रात दस बजे उसकी पत्नी बिना प्रेस की वर्दी दुकान से वापस लाई। पूछने पर पति - पत्नि ने बताया, "सुबह छह बजे की ड्यूटी है। एक दिन एक वरकर ने फैक्ट्री में वर्दी पहनने में कुछ देर कर दी थी। इस पर केल्विनेटर मैनेजमेंट ने उस मजदूर की आधे दिन की अबसैन्ट लगा दी।"

★ खुल कर फिर बन्द हुई **मैटल बॉक्स** के पाँच-छह मजदूरों ने फैक्ट्री गेट पर बात-चीत में कहा, "कोई भी सरकार मजदूरों का भला नहीं करती। हमने डी एल सी, डी सी, एस पी सब देख लिये, किसी ने भी हमारी नहीं सुनी। फैक्ट्रियों के बड़े-बड़े लीडरों से हमने मदद माँगी पर उन्होंने भी हमारी अनसुनी कर दी।" "क्या आपने आम मजदूरों से मदद माँगी?" के उत्तर में मैटल बॉक्स वरकरों ने कहा, "नहीं, यह तो हमने नहीं किया।"

★ **एस्कोर्ट्स** के एक मजदूर ने बताया, "29 सितम्बर की हड़ताल के बदले में 8 अक्टूबर को सैकेन्ड सैटरडे की छुट्टी के दिन हमें फैक्ट्री में काम करना पड़ेगा। यूनियन लीडरों और मैनेजमेंट में यह समझौता हुआ है।"

★ **लखानी फुटवीयर** के एक मजदूर ने कहा, "अखबार में हमारी फैक्ट्री के बारे में भी कुछ न कुछ दो। लखानी में वरकरों की हालत बहुत खराब है। मैं पहले बहुत तगड़ा था। रबड़ की गैसों के कारण पेट में हर समय गड़बड़ी ने देखो मुझे कितना दुबला-पतला कर दिया है। लखानी मैनेजमेंट बहुत अन्याय करती है।"

★ मुजेसर में **हनु रबड़ इन्डस्ट्रीज** में सितम्बर में तीन-चार दिन सब वरकरों को घास खोदते देखा गया क्योंकि फैक्ट्री में रबड़ नहीं थी।

★ **30 सितम्बर** को फरीदाबाद में मुजेसर को मथुरा रोड़ से जोड़ती सड़क के गड्ढों को कूड़े-कचरे से भरा गया देखा। प्लेग के हों चाहे अन्य कोई कीटाणु हों, उन्हें फैलाने का यह एक बढिया तरीका है।

फरीदाबाद में मजदूरों के सामुहिक कदम

★ बाटानगर में 58 वरकरों द्वारा एक शिफ्ट में 850 पावर शूज बनाना निर्धारित है जबकि **फरीदाबाद बाटा फैक्ट्री** में 36 वरकरों द्वारा एक शिफ्ट में 950 पावर शूज बनाना निर्धारित है। इधर जूतों की क्वालिटी सुधारने के नाम पर मैनेजमेन्ट ने फर्मो का वजन और हाइट बढा दिये हैं। आगे ही वर्क लोड से दबे जा रहे पावर वरकरों ने इस नये बोझे से बढी अपनी परेशानियाँ मैनेजमेंट और लीडरों को कई बार बताई। लेकिन हालात में कोई परिवर्तन नहीं किया गया। पावर शूज डिपार्टमेंट वरकरों में अधिकतर महिला मजदूर हैं। 26 सितम्बर को अगले रोज गेट मीटिंग होने का पता चलने पर इन वरकरों ने उसके बॉयकाट का सामुहिक फैसला किया। 27 सितम्बर को पावर शू डिपार्टमेंट की महिला मजदूरों ने लीडरों की गेट मीटिंग का सामुहिक तौर पर बॉयकाट किया।

बाटा फैक्ट्री में ही **सोल कटर** मशीनें खराब होने से काफी परेशान रहते हैं। 9 सितम्बर को चेन पिन और नाइफ के बार-बार टूटने से वरकर फिर परेशान थे। मजदूरों ने मैनिप्युलेशन मैनेजर को अपनी परेशानी बताई। देखेंगे-देखेंगे कह कर साहब दो बार टाल-मटोल कर गये। इस पर सब सोल कटरों ने मशीनें बन्द की और जनरल मैनेजर के दफ्तर पहुँचे। हक्की-बक्की पी ए ने जी एम से दो बार फोन पर बात करके उनके व्यस्त होने की कह कर मजदूरों को टालने की कोशिश की पर सोल कटरों के डटे रहने पर उन्हें बैठने को कहा। इतने में पूर्व में टाल-मटोल कर चुके साहब हड़बड़ाये हुये वहाँ पहुँचे और आश्वासन पर आश्वासन दे कर सोल कटरों को वापस ले गये तथा तत्काल चेन पिन को टैम्पर करके मशीन में लगवाया।

वर्दी-जूते बाटा फैक्ट्री मजदूरों को नहीं दिये जाते। काफी लड़-झगड़ कर वर्दी ले चुके और जूतों के लिये प्रयासरत **सोल कटरों** को लीडरों ने पिछली एग्रीमेंट में जूते देने की बात भूल से छूट गई बताई थी। 14 सितम्बर को गेट मीटिंग में सुनाई गई नई एग्रीमेंट में सोल कटरों को जूते देने का जिक्र तक नहीं था। सोल कटरों को बहुत गुस्सा आया। गेट मीटिंग के बाद इन मजदूरों ने आपस में विचार-विमर्श करके सामुहिक कदम उठाया। सोल कटरों ने नियमानुसार काम करना शुरु कर दिया। इससे थोड़ी ही देर बाद कुछ आटोमेटिक लाइनों के बन्द होने की नौबत आ गई। लीडरों ने महीने-दो महीने देखने की कह कर मामला टाला।

> **काम सुबह और फिर शाम को, ड्यूटी दो शिफ्टों में बाँटने के खिलाफ हैल्थ वरकरों के संघर्ष के सिलसिले में पँजाब में 1986 में स्वास्थ्यकर्मियों ने खुद लगातार काम, एक शिफ्ट में काम करना शुरु कर दिया था। इससे हड़बड़ा कर हरियाणा सरकार ने तब हैल्थ वरकरों के लिये एक शिफ्ट में काम शुरु किया था पर तीन महीने बाद अस्पतालों में ही इसे लागू रखा और ई एस आई डिस्पैंसरियों तथा प्राइमरी हैल्थ सैन्टरों व कम्युनिटी हैल्थ सैन्टरों में ड्यूटी फिर दो टुकड़ों में कर दी। तबसे डिस्पैन्सरियों व सैन्टरों में कार्यरत हैल्थ वरकर लगातार काम वाली ड्यूटी डिमान्ड करते रहे हैं पर हरियाणा सरकार अनसुनी करती रही है। अब हरियाणा के हैल्थ वरकरों ने पँजाब के अपने साथियों की तरह खुद सिंगल शिफ्ट लागू कर दी है। हरियाणा के सरकारी डॉक्टरों ने कुरुक्षेत्र में अपने 4 सितम्बर के सम्मेलन में सिंगल शिफ्ट की घोषणा की और सब हैल्थ वरकरों ने 5 सितम्बर से हरियाणा की समस्त डिस्पैंसरियों-सैन्टरों में इसे लागू कर दिया। तीन हजार से अधिक हैल्थ वरकरों के इस सामुहिक कदम पर हरियाणा सरकार चुप्पी साधे है।**
>
> **फैक्ट्रियों में तथा बस्तियों में सामुहिक कदमों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाना हमारे लिये खुशी का काम है। अगर आपके पास ऐसी जानकारी है तो वह हमें दें।**

★ **केल्विनेटर** में ठेकेदारों के मजदूरों को तनखा टाइम पर नहीं दी जाती। अगस्त का वेतन देने में भी देरी की गई। इस पर इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित केल्विनेटर प्लान्टों में ठेकेदारों के मजदूर इक्ट्ठे हो कर24 सितम्बर को वर्क्स मैनेजर भांवरा के पास गये। साहब चौंके। ठेकेदारों के सौ से अधिक वरकरों से घिरे साहब ने फटाफट आश्वासन दिया कि अगले दिन उन्हें वेतन दे दिया जायेगा। 25 को ठेकेदारों ने मजदूरों को चेक दिये लेकिन वरकर जब बैंक से पैसे लेने गये तो चेकों के अकाउन्ट में पैसा ही नहीं मिला। मैनेजमेंट ने 27 सितम्बर को अकाउन्ट में पैसे जमा किये और तब केल्विनेटर में ठेकेदारों के मजदूरों को अगस्त माह का वेतन मिला।

★ **ईस्ट इंडिया पावरलूम** मैनेजमेंट ने 18 सितम्बर को कुछ वरकरों को प्लाट नम्बर 11 में भेज कर 10 नम्बर के परवाइन्डरों के सिर पर 24 और मशीनों को बॉबिन देने का अतिरिक्त बोझा लाद दिया। ऊपर से मैनेजमेंट ने 3 परवाइन्डर हैल्परों को फालतू करार दिया। वर्क लोड बढाने और वरकर कम करने की मैनेजमेंट की स्कीम के खिलाफ परवाइन्डर 20 सितम्बर को इक्ट्ठे हो कर मैनेजमेंट के पास गये।

★ 22 सितम्बर को **झालानी टूल्स I प्लान्ट** की प्लेटिंग डिपार्टमेंट में निक्कल प्लेटें कम थी जिससे फुल ज़िग लगाने पर माल खराब आता था। इसलिये माल की आधे से भी कम जिग लगानी पड़ रही थी। निक्कल चढने में टाइम भी ज्यादा लग रहा था। काम पूरा करने के बावजूद प्रोडक्शन आधा भी नहीं निकल रहा था जिसके लिये बाद में मैनेजमेंट तनखायें काटती! इसलिये प्लेटिंग के सब वरकर इक्ट्ठे हो कर डिपार्ट इन्चार्ज के पास गये और समस्या बता कर निक्कल की डिमान्ड की। साहब ने मैटेरियल कम होने की बात स्वीकार कर तनखा नहीं काटने का आश्वासन दिया और कहा, "मजदूर बैठे हुये अच्छे नहीं लगते। वरकर काम करते हुये ही अच्छे लगते हैं। इसलिये खाली बैठने की बजाय चलते रहो।"

★ **झालानी टूल्स II प्लान्ट** में शुक्रवार 9 सितम्बर को तीन बजे मैनेजमेंट ने नोटिस लगाया कि वीकली रैस्ट सन्डे की बजाय शनिवार, 10 सितम्बर को होगा। अपनी साप्ताहिक छुट्टी से इस खिलवाड़ के खिलाफ मजदूरों में गुस्सा भड़का और उन्होंने प्लान्ट में मौजूद यूनियन लीडरों को घेर कर उनसे सवाल-जवाब शुरु कर दिये। फस्ट प्लान्ट जा कर मामला निपटा कर अभी आते हैं कह कर लीडर भागे। देर शाम तक लीडरों के फिर II प्लान्ट में दर्शन नहीं हुये।

सामुहिक कदमों से जुड़े कुछ सवाल

(दूसरी किश्त)

सितम्बर अंक में हमने जून-जुलाई-अगस्त अंकों में फरीदाबाद में कुछ फैक्ट्रियों में मजदूरों के सामुहिक संघर्षो की रिपोर्टो के पश्चात् सामुहिक कदमों से जुड़े कुछ सवालों पर आम चर्चा आरम्भ की थी। इस सिलसिले में आगे बढने से पहले हम यह स्पष्ट करने की कोशिश करेंगे कि हम लोग क्यों इस सवाल को उठा रहे हैं। सामुहिक कदमों का आज महत्व कितना है?

हम में हरेक के लिये कभी नौकरी का प्रश्न, कभी सिर पर छत का सवाल, कभी राशन की समस्या, कभी गुन्डागर्दी का भय, कभी एडवान्स का मामला तो कभी छुट्टी की जरूरत हमारी कार्यसूची का नम्बर एक काम बन जाता है। हजार मामलों से एक साथ जूझता हम में से हर कोई अपने अगल-बगल वालों की कार्यसूची पर भी इनमें से कभी एक तो कभी दूसरे को नम्बर एक काम के स्थान पर मुँह बाये खड़ा देखता है। यह अहसास हमें बार-बार होता है कि आज जो इसकी समस्या है वह कल मेरी हो सकती है, आज जो इसके साथ हो रहा है वह कल मेरे साथ हो सकता है। यह हमें एक-दूसरे की सहायता करने को प्रेरित करता है। अहसास व प्रेरणा को कार्यरूप देने, अमलीजामा पहनाने में अपनी निजी सीमाओं के संग-संग अन्य रुकावटें भी होती हैं – उनकी चर्चा हम फिर करेंगे। लेकिन एक बात स्पष्ट है कि जो हम में से हरेक की निजी समस्याओं के रूप में प्रकट होती हैं वे हकीकत में सामाजिक समस्यायें हैं।

हम में से हरेक की बस्ती में कभी पानी की समस्या, कभी बिजली का मसला, कभी कूड़े के ढेर, कभी पुलिस की लाठी-गोली तो कभी बच्चों की परेशानियाँ अत्याधिक बढ जाती हैं। अपनी अगल-बगल की बस्तियों में भी हमें ऐसे ही मसले तीखी चुभन लिये दिखाई देते हैं। हालाँकि बस्ती विशेष की विकट समस्यायें उसके बाशिन्दों को उलझाये रहती हैं पर आस-पास की बस्तियों पर पड़ती निगाहें बार-बार इस अहसास को मजबूत करती हैं कि बात एक हमारी बस्ती की ही नहीं है। और हैजा - एड्स - प्लेग की स्थिति में तो मामला शहर - प्रान्त - देश तक की सीमाओं को पार कर जाता है। जो हो, यह अधिकाधिक स्पष्ट हो रहा है कि जो समस्यायें हमारी बस्ती में हैं वे हकीकत में हजारों बस्तियों की समस्यायें हैं, सामाजिक समस्यायें हैं।

जहाँ हम काम करते हैं वहाँ कभी फैक्ट्री के बन्द होने का खतरा, कभी छँटनी की समस्या, कभी वेतन में दिक्कतें, कभी भारी वर्क लोड का बोझ, कभी खराब वर्किंग कन्डीशन तो कभी दादागिरी हमारे लिये बरदाश्त से बाहर की चीजें बन जाती हैं। फरीदाबाद जैसे फैक्ट्रियों के शहर में यह साफ-साफ दिखाई देता है कि एक मामला कभी के जी खोसला कम्प्रेसर में तीखे टकराव को जन्म देता है तो वही दूसरे वक्त केल्विनेटर में हड़ताल-तालाबन्दी को सामने लाता है। भारतीया इलेक्ट्रिक स्टील और नोरदर्न इंडिया स्टील में क्लोजर के नोटिस संग-संग भी लगते हैं। हम जहाँ काम करते हैं वहाँ की हजारों-हजार समस्यायें हमारी आँखों पर पट्टी बाँध कर उसी फैक्ट्री तक निगाहों को सीमित करने के लिये बहुत होती हैं पर अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों से पड़ता हमारा वास्ता इस हकीकत को बार-बार सामने लाता है कि फैक्ट्रियों में हालात कोई बहुत ज्यादा भिन्न नहीं हैं। सब फैक्ट्रियों में कम से कम लागत पर अधिक से अधिक प्रोडक्शन लेने की पालिसी होती है। जाहिर है कि जैसी समस्यायें हमारी फैक्ट्री में हैं वैसी ही समस्यायें हजारों-लाखों फैक्ट्रियों में दुनियाँ के कोने-कोने में हैं।

शेष पेज तीन पर

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए महबूब प्रिंटर्स सारन, फरीदाबाद से से मुद्रित किया।
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स B-548 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद से टाइपसैट।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73